



अनुदित लेख

महात्मा गाँधी जी के निष्ठावान अनुयायी - हमारे तगडूर गाँधी

- मूल कन्नड लेखक - नं. श्रीकंठकुमार

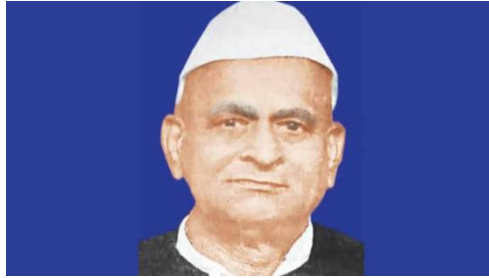
हिन्दी अनुवाद- के.एस. करुणालक्ष्मी

सहायक प्राध्यापिका और हिन्दी विभागाध्यक्षा

सरकारी महाविद्यालय, बेट्टंपाडी

lakshmikarunasharma@gmail.com

मूल कन्नड लेखक - नं. श्रीकंठकुमार, हिन्दी अनुवाद- के.एस. करुणालक्ष्मी, महात्मा गाँधी जी के निष्ठावान अनुयायी - हमारे तगडूर गाँधी, आखर हिंदी पत्रिका, खंड2/अंक 3/सितंबर 2022,(245-248)



स्वतंत्रता आंदोलन में संपूर्ण रूप से अपने जीवन को समर्पित करनेवालों में से मैसूर रियासत के तगडूर रामचंद्रराव जी प्रमुख थे। उनका जन्म चामराजनगर के कुदेरु नामक गाँव में 6-10-1898 को हुआ। मैसूर का तगडूर गाँव उनका कार्यक्षेत्र बना। 'तगडूर गाँधी' नाम से विख्यात रामचंद्ररावजी ने 'अन्यमिंद्र करिष्यामि' उक्ति के अनुसार देश भर में व्याप्त स्वतंत्रता की अग्नि में पूर्ण रूप से अपने जीवन को समर्पित कर दिया। अंग्रेजों के विरुद्ध चल रहे आंदोलनों में भाग लेने के साथ-साथ वे समाज सेवा में भी लगे रहे। अमीरी और गरीबी के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए उन्होंने सर्वसमता का समर्थन किया। भूदान, ग्रामदान और खादी-

इन तीनों आंदोलनों के प्रमुख नेता तगडूरु रामचंद्रजी को जनता 'तगडूरु गाँधी', 'कर्नाटक के गाँधी' कहकर महात्मा गाँधी जी से उनकी तुलना करती थी। महात्मा गाँधी जी के निष्ठावान अनुयायी बनकर इन्होंने स्वातंत्र्य, राजनीति और सामाजिक क्षेत्र में सेवा के लिए अपने आपको समर्पित कर लिया। बचपन के दिनों में छोटा ठेला धकेलते हुए जीवन निर्वाह करनेवाले रामचंद्रजी ने आगे अपार लोकानुभव प्राप्त करके उसे समाजोद्धार के कार्यक्रमों में लग गए।

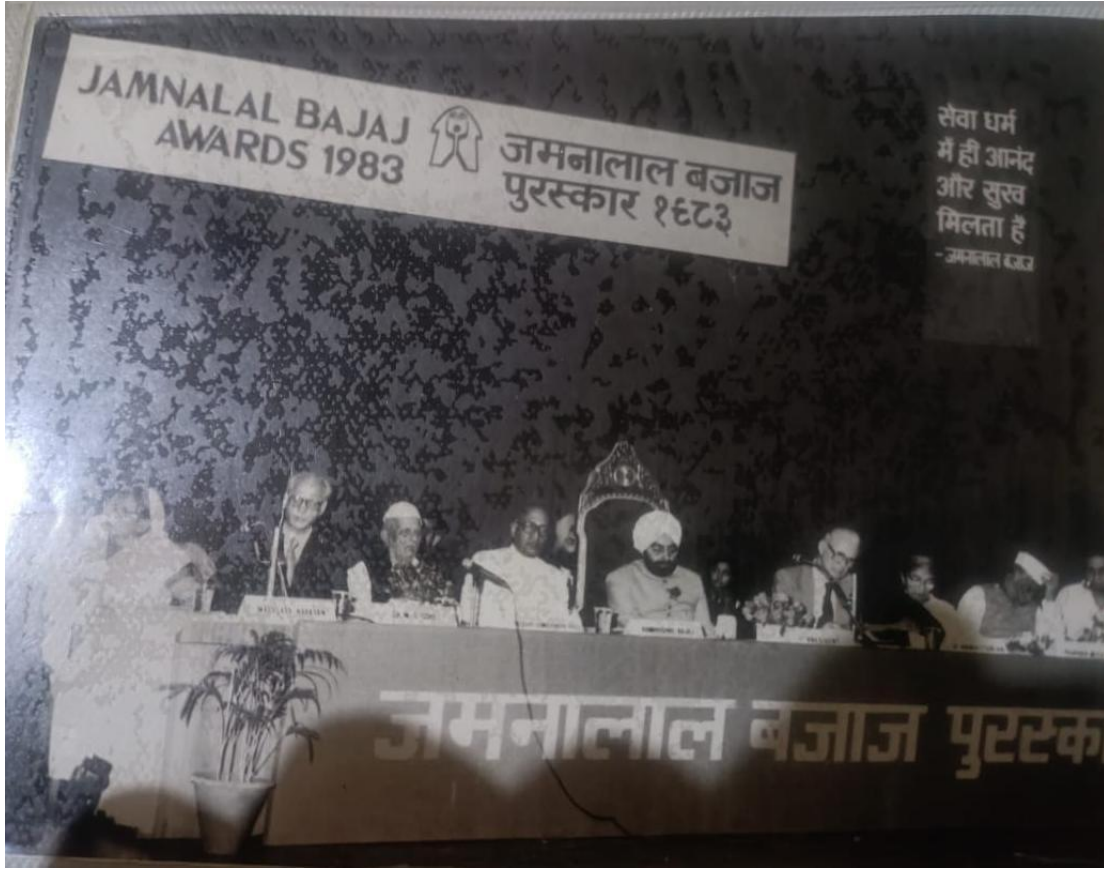
रामचंद्रराव जी बड़े तीक्ष्णमति थे। वे अपने वरिष्ठ सहपाठियों से देश के और विश्वभर के कार्यकलापों की जानकारी प्राप्त करते थे। अपने बचपन के दिनों में ही महात्मा गाँधी जी से प्रभावित होकर वे उनके मार्गदर्शन में स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े थे। उनका सारा जीवन संघर्षमय रहा। अपने जीवन भर किए गए रचनात्मक कार्यों से जनानुरागी होकर वे विख्यात हुए। उन्होंने अपने जीवन का अधिक समय गाँधी जी के सत्याग्रह और स्वतंत्रता आंदोलन के लिए सीमित रखा। गाँधीजी के नेतृत्व में संपन्न 1928 के स्वतंत्रता आंदोलन में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया तथा मैसूर में सैमन कमीशन को बहिष्कृत करके पहली बार जेल की यात्रा की। उसके बाद वे कई बार जेल गए। जेल से मुक्त होते ही वे फिर स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़ते थे। स्वराज्य मंदिर की स्थापना, प्रेस ऐक्ट सत्याग्रह, शिवपुर ध्वज सत्याग्रह आदि आंदोलनों में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उनके समाजोद्धार के कार्यों में प्रमुख था अस्पृश्यता निवारण। देवालियों में पिछड़े वर्गों के लोगों को प्रवेश दिलाने में उनका पात्र प्रमुख था। वे आंदोलनों में केवल व्यक्ति नहीं बल्कि एक शक्ति बनकर भाग लेते थे। उन्होंने आजीवन धर्म, न्याय और सत्य का पालन किया। शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास करके उसे आत्मनिर्भर बनाना है। पर अंग्रेजों की शिक्षा पद्धति में इस उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो पाती थी। इसलिए उन्होंने महात्मा गाँधीजी द्वारा रूपायित जीवन शिक्षा पद्धति को मानकर तगडूरु में मूल शिक्षा केंद्र की स्थापना की। उनका विचार था कि ग्रामों के उद्धार से ही भारत का उद्धार संभव है। गरीबी, निरक्षरता, बीमारी आदि ग्राम जीवन से जुड़ी हुई समस्याएँ हैं। उनके मूलोत्पादन के लिए ग्रामस्वराज्य ही मूलमंत्र है। स्वतंत्रता संग्राम में तगडूरु रामचंद्रजी के योगदान के बारे में जानकर महात्मा गाँधीजी 1934 में कर्नाटक के तगडूरु और बदनवाळु गाँव आए थे। गाँधीजी के आगमन से कर्नाटक का स्वातंत्र्य आंदोलन सशक्त हुआ। यह एक अविस्मरणीय घटना है।



1957 में पूज्य विनोबा भावे जी की सलाह के अनुसार मैसूर रियासत के इलवाला ग्राम में अखिल भारत ग्रामदान परिषद की सभा आयोजित थी। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी उसके अध्यक्ष थे। उस सभा में कई राज्यों के राज्यपाल, मुख्यमंत्री और अखिल भारत सर्वसेवा संघ के सदस्य उपस्थित थे। उस दिन के समावेश में भूदान-ग्रामदान तत्व को संपूर्ण रूप से अंगीकृत किया गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरूजी ने शासन के प्रारूप को केंद्र सरकार में अंगीकृत करके सभी राज्यों में उसे अमल में लाने के लिए भेजा। उसे कर्नाटक में क्रियान्वयन करने के लिए तगडूर रामचंद्रजी ने निरंतर कई दशकों तक संघर्ष किया। उसी तरह कर्नाटक में क्रांतिकारी विधेयक के रूप में ख्यात 'कर्नाटक ग्राम स्वराज्य और पंचायत राज' विधेयक को अमल में लाने के लिए संघर्ष करते हुए रामचंद्रजी ने तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री रामकृष्ण हेगड़े जी से बातचीत करके इसे कर्नाटक में भी अमल में लाने का आग्रह किया। उसके फलस्वरूप 1985 में कर्नाटक राज्य में पंचायत राज विधेयक कार्यान्वित हुआ।

सार्थक जीवन बितानेवाले 'तगडूर गाँधी' नाम से प्रसिद्ध तगडूर रामचंद्रजी की सामाजिक सेवाएँ अपार हैं। 1920 में उन्होंने मैसूर के लैन्सडाउन भवन के ऊपर कांग्रेस के कार्यालय की स्थापना की। उन्होंने 1924 में महात्मा गाँधीजी की अध्यक्षता में बेलगाँव में संपन्न हुए अखिल भारतीय कांग्रेस महा अधिवेशन में भाग लेकर स्वतंत्रता संग्राम के कार्यों का विवरण दिया। 1925 में तगडूर में खादी उत्पादन के लिए 'कर्नाटक खद्दर परस्पर सहायक संघ' और आश्रम की स्थापना की तथा 1930 में तगडूर में खादी केंद्र की स्थापना की। 1934 में तगडूर में पिछड़े वर्गों के विद्यार्थियों के लिए आवासीय शाला की स्थापना, 1957 में पूज्य विनोबा भावे जी के साथ कर्नाटक राज्य भूदान-ग्रामदान आंदोलन यात्रा में सक्रिय रूप से भागीदारी, 1963 में तगडूर में प्रौढशाला की स्थापना, 1969 में मैसूर में दयासागर वृद्ध पितामह एम.वेंकटकृष्णय्या (तातय्या) जी की शिला प्रतिमा की स्थापना, 1972 में तगडूर में खादी केंद्र की जनता प्रौढशाला के निजी भवन का निर्माण, 1985 में मैसूर में शारदा निकेतन हॉस्टेल की स्थापना आदि उनके समाजमुखी तथा देशसेवापरक कार्य थे। स्वतंत्रता सेनानियों के लिए सरकार द्वारा दिया जानेवाला स्वर्णपत्र और पेंशन को तिरस्कृत करने के द्वारा उन्होंने अपने स्वाभिमान का परिचय दिया।

महात्मा गाँधीजी के अनुयायी तथा आत्मीय डॉ. जमनालाल बजाजजी ने स्वतंत्रता सेनानियों, महात्मा गाँधीजी के तत्वों को मानकर प्रचार करनेवालों तथा प्रमुख समाज सेवकों को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत करने के लिए 1977 में एक फाउंडेशन की स्थापना की। उस फाउंडेशन से 'कर्नाटक के गाँधी' नाम से विख्यात श्री तगडूर रामचंद्रराव जी को उस समय के राष्ट्रपति श्री ज्ञानी ज़ेलसिंगजी तथा नोबेल पुरस्कृत नार्मन बोरलॉगजी ने नई दिल्ली में पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया।



निःस्वार्थ भाव से सेवारत तगडूर रामचंद्रजी का स्वर्गवास 28-12-1988 को उनके 90 वें साल में हुआ। केंद्र सरकार के श्री जमनालाल बजाज पुरस्कार से पुरस्कृत कर्मयोगी श्री तगडूर रामचंद्ररावजी का स्वतंत्रता आंदोलन के लिए योगदान और उनकी निःस्वार्थ सेवा को इस आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर स्मरण करना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।
